सत्गुर हरदेव प्यारे हर कदम तेरा कमाल
धन तेरा जीवन समर्पित धन तेरा छत्तीस साल

गुरुबचन के जाने से छाई थी मासूमी बड़ी
घात सच पे क्या हुआ आई थी मुश्किल की घडी
ऐसे में तूफांनो से ले आया कश्ती को निकाल

ये कहा तूने हो मन मे बदले की न भावना
हर किसी के वास्ते करते रहो शुभ कामाना
माफ पापी को किया रखा नही कोई मलाल

इक कदम धरती पे था और दूसरा अम्बर पे था
काम छतीस वर्षों में छत्तीस युगों का कर गया
ढूढ़ने से भी कही नही मिलती ऐसी मिसाल

दुनिया सुख की नींद सोये इसलिए जगता रहा
ना थका , ना रुका तू रात दिन चलता रहा
आसमा से भी तू ऊँचा और सागर से विशाल

तेरे पास जो भी आया वो तेरा ही हो गया
तेरी मीठी प्यारी सी मुस्कानों में ही खो गया
प्यार जन – जन को दिया करता रहा सबको निहाल

शुक्रिया हरदेव तू हरदेव बाणी दे गया
जिसको पढ़कर भक्ति पथ पे अब ‘ जगत’ हैं चल रहा
रुप में सत्गुर माँ के है लिया हमको संभाल

तर्ज़: चल मुसाफिर तेरी मंजिल दूर है...